घड़ियालों और मगरमच्छों को संरक्षण चाहिए

नरेंद्र देवांगन

पृथ्वी पर जीव का अवतरण और उसके बाद विकास की प्रक्रिया से गुज़रना अपने आप में एक रोचक कहानी है। वैज्ञानिकों ने रात-दिन एक कर इन गुत्थियों को सुलझाकर मानव मन की जिज्ञासा को शांत करने का प्रयास किया है।

एक कोशीय प्राणी का अवतरण पृथ्वी पर ज़मीन पर नहीं हुआ था, वह पानी में पैदा हुआ था। यह सब रासायनिक क्रियाओं के फलस्वरूप हुआ था। एक कोशीय प्राणी को जटिल बहुकोशीय प्राणी में बदलने में करोड़ों वर्ष लगे। पृथ्वी पर विभिन्न अंतरालों में भिन्न-भिन्न समुदाय के रूप में जीव उभरते रहे। ये समुदाय क्रमशः प्रोटोज़ोआ, पोरीफेरा, एनीलिडा, एंफीबिया से सीढ़ी दर सीढ़ी ऊपर चढ़ते गए। उभयचर (एंफीबिया) समुदाय जीव जगत के इतिहास में एक ऐसी कड़ी है, जिसने पानी के रहन-सहन से ऊबकर ज़मीन पर रहने की भी कोशिश की और उसमें सफलता की ओर बढ़ा, इसमें आज भी मेंढक जैसे प्राणी हैं। इसके बाद के समुदाय रेप्टीलिया, ऐवीज़ (पक्षी) और अंतिम स्तनधारी हैं। आज मनुष्य पृथ्वी पर एकछत्र राज कर रहा है। हर प्राणी समुदाय से श्रेष्ठ होने का डंका बजा रहा है। इसी मदहोशी में उसने सारे प्राकृतिक नियमों को ताक पर रख दिया है। मनुष्य जिन सामुदायिक सीढ़ियों से होकर ऊपर चढ़ा था आज उन्हीं जीव समुदायों को तहस-नहस करने में भूमिका निभा रहा है। एक ओर प्रकृति की क्रूरता तथा दूसरी ओर मनुष्य की लापरवाही, जैविक इतिहास को समाप्त करने पर तुले हैं।

यहां पर प्रकृति के क्रूर अत्याचार का उल्लेख करना आवश्यक हो जाता है। सबसे ज़्यादा कुप्रभाव प्रकृति ने यदि किसी समुदाय पर छोड़ा है, तो वह है रेप्टिलिया। सर्वप्रथम ज़मीन पर रेंगने वाले जीवों का पृथ्वी पर लगभग 12 करोड़ वर्ष तक एकछत्र राज्य रहा। ज़मीन पर अंडे देकर सेने की प्रक्रिया यहीं से शुरू हुई। इस समुदाय के एकछत्र राज्य को समाप्त हुए भी 6 करोड़ वर्ष हो चुके हैं। डायनासौर आज मात्र जीवाश्म रूप में है। आजकल के घड़ियाल तथा मगरमच्छ की लगभग 21 प्रजातियां उन्हीं के वंशज है, इनमें से 16 प्रजातियों का अस्तित्व खतरे में है।

घड़ियाल वंश के अंतर्गत ऐलोगेटोरायडे, गैविलीडे तथा क्रोकोडायलिडे आते हैं। घड़ियाल के ऊपर तथा नीचे के जबड़ों के दांत लगभग एक पंक्ति में होते हैं। घड़ियाल का थूथन मगरमच्छ की अपेक्षा काफी लंबा होता है।

मगरमच्छ (क्रोकोडायल्स) अफ्रीका, दक्षिण पूर्वी एशिया, न्यूगिनी, ऑस्ट्रेलिया तथा अमेरिका के कुछ भागों में पाए जाते हैं जबकि एलीगेटर्स केवल अमेरिका में पाए जाते हैं। इसकी एक प्रजाति अब भी चीन में पाई जाती है। गैविलिडे परिवार की एक जाति घड़ियाल भारत, पाकिस्तान तथा बर्मा में पाई जाती है।

भारत में क्रोकोडायल्स की तीन प्रजातियां मिलती हैं। ये हैं घड़ियाल, मगरमच्छ तथा एस्चुराइन क्रोकोडायल। मगरमच्छ भारत से लेकर पश्चिम में ईरान तक मिलता है। यह श्रीलंका में भी पाया जाता है। घड़ियाल पतली थूथन वाला होता है। यह भारत में गंगा, ब्रम्हपुत्र तथा महानदी के अतिरिक्त बर्मा की इरावती नदी में भी पाया जाता है। घड़ियाल मगरमच्छ की तुलना में बड़े आकार का होता है। साथ में इसकी शक्तिशाली पूंछ होती है।

घड़ियाल अधिकतर बड़ी नदियों के गहरे जल के कुंडों में निवास करता है, जबकि मगरमच्छ झीलों, तालाबों तथा छोटी-छोटी नदियों में भी पाया जाता है। यह अधिकांशतः मछली खाकर मस्त रहता है जबकि वयस्क मगरमच्छ अवसर मिलने पर बकरी तथा अन्य पशुओं का शिकार करने से नहीं चूकता।

घड़ियाल सामान्यतः बहुपत्नी वाला जीव है। एक वयस्क नर घड़ियाल तीन से चार मादा घड़ियालों से सहवास करता है। यह प्रायः शरद ऋतु के अंत में सहवास करते हैं। मार्च के मध्य से मादा घड़ियाल अपनी तैयारी में व्यस्त हो जाती

है। लगातार महीने भर रात में नदी से निकलकर, किनारों पर सुरक्षित स्थान ढूंढकर गड्ढा खोदती है, इसमें वह अंडे देने की तैयारी करती है। अप्रैल के शुरू में वह गड्ढे में लगभग चालीस अंडे देती है। अंडे देने के बाद वह बालू से गड्ढे को अच्छी तरह ढंक देती है।

घड़ियाल अपने अंडे पानी के नज़दीक देती हैं, जबकि मगरमच्छ अपने अंडे पानी से दो सौ मीटर की दूरी पर ज़मीन पर घड़े के आकार में बनाए गड्ढे में देती है। 60 से 80 दिन तक अंडों को सेने के बाद भ्रूण अंडे से बाहर आता है। अंडे सेने का ताप लगभग 27 से 35 डिग्री सेल्सियस होता है। अंडा तब फूटता है या मां तब फोड़ती है, जब बच्चा अंदर से चहलकदमी करता है। नर और मादा दोनों मिलकर बच्चों को पानी में तैराते हैं। यह भी देखने में आया है कि दो मीटर तक लंबे होते-होते घड़ियालों की संख्या बहुत कम रह जाती है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद तो घड़ियालों की संख्या नगण्य के बराबर रह गई है। व्यापारियों ने मार-मारकर इनकी खालें बेचकर खूब धन कमाया है। दुर्लभ प्राणियों को सुरक्षित करने के लिए 1972 में वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम बनाया गया। इसके अंतर्गत इन्हें संरक्षित घोषित किया गया। इसका शिकार एवं व्यापार अवैध घोषित कर कड़ा प्रतिबंध लगा दिया गया। घड़ियाल तथा घड़ियाल के किसी भाग से बनी वस्तुओं का निर्यात भी एक अन्य अधिनियम के द्वारा बंद कर दिया गया।

1975 में उत्तरप्रदेश में घड़ियाल पुनर्वास की एक परीक्षण योजना शुरू की गई थी। इसमें घड़ियाल के 38 अंडों को कृत्रिम ढंग से सेने की प्रक्रिया अपनाई गई। यह परियोजना अच्छी चल निकली। पहले उत्तरप्रदेश की प्रमुख नदियों का सर्वेक्षण किया गया था, इससे प्राप्त सूचना से अनुमान लगा कि विभिन्न आयु के अब 60 से अधिक घड़ियाल नहीं बचे हैं। फिर कोशिश की गई कि घड़ियालों के अंडे देने वाले स्थानों का पता किया जाए। फरवरी के मध्य में विस्तृत छानबीन की गई। जब घड़ियालों ने अंडे देने शुरू किए, तब उन अंडों को इकट्ठा कर लकड़ी के बड़े-बड़े बॉक्सों में बालू भरकर प्रजनन केन्द्रों पर लाया गया। उत्तरप्रदेश में घड़ियाल प्रजनन केन्द्र लखनऊ में कुकरैल तथा बहराइच ज़िले के कतरनिया घाट में बनाए गए। इन प्रजनन केन्द्रों में जब घड़ियाल लगभग डेढ मीटर लंबे हो जाते, तब बरसात के तुरंत बाद नदियों में छोड़ दिए जाते। इस प्रकार वे अपने प्राकृतिक वातावरण में रम जाते।

1979 से अब तक चंबल नदी में 1440, राप्ती में 30, गिरवा में 184, घाघरा में 193, राम गंगा में 48 तथा शारदा में 115 घड़ियालों को स्वतंत्र विचरण करने के लिए छोड़ा गया है। 1984 से अब तक चंबल नदी में 30, गिरवा में 17, घाघरा में 13 तथा राम गंगा में 23 मगरमच्छ छोड़े गए। प्रजनन के ये आंकड़े आश्वस्त तो नहीं करते पर विश्वास पैदा कराते हैं कि यदि गंभीरतापूर्वक वन्य, जलचरों के संरक्षण पर ध्यान केन्द्रित किया जाए तो हम इस पृथ्वी से उन्हें नष्ट होने से बचा सकते हैं।

ध्यान देने की आवश्यकता नदियों की ओर भी है, क्योंकि जिस मेहनत से प्रजनन को सफल बनाया जा रहा है, उसी मेहनत से नदियों के प्रदूषण को भी रोकना होगा, तब ही मगरमच्छ व घड़ियालों के जीवन चक्र को सुरक्षित किया जा सकता है। ***(स्रोत फीचर्स)***